Volume: 5 Issue: 1 Pages: 144-145

बौद्ध धर्म का प्रसारः एक अध्ययन

*[1] डॉ. वर्षा सूर्यवंशी

*[1] अतिथि व्याख्याता, इतिहास विभाग, डॉ. खूबचन्द बघेल शासकीय महाविद्यालय, भिलाई, छत्तीसगढ़, भारत।

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (QJIF): 8.4
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 22/Dec/2025
Accepted: 26/Jan/2026

***Corresponding Author**
डॉ. वर्षा सूर्यवंशी
अतिथि व्याख्याता, इतिहास विभाग, डॉ. खूबचन्द बघेल शासकीय महाविद्यालय, भिलाई, छत्तीसगढ़, भारत।

सारांश
पुरातात्विक स्त्रोतों एवं चीनी विद्वान केगटाई के आधार पर यह प्रमाणित किया जा सकता है कि कम्बुज में सर्वप्रथम महायान धर्म का प्रवेश हुआ था और आगे चलकर लंका में हीनयान बौद्ध धर्म का प्रवेश हुआ। कम्बुज के कुछ शासक बौद्ध होते हुए भी 'राजकीय देवराज' मत का विरोध न कर सके, पर बुद्ध को भी त्रिमूर्ति में स्थान दिया। आगे चलकर देवराज मंदिर में उसकी स्थापना हुई। कम्बुज देश में बौद्ध धर्म के महायान मत का पहले प्रवेश हुआ किंतु हीनयान बौद्ध धर्म के प्रवेश ने इस संतुलन को विभिन्नता में परिवर्तित कर दिया। महाथेर सिरि सिरिन्दमोलि (श्री इन्द्रमौलि) को एक गाँव देने का उल्लेख है और 1231 ई. में एक विहार का निर्माण हुआ जहाँ एक बौद्ध प्रतिमा स्थापित की गयी। सम्राट् ने इस विहार को चार गाँव प्रदान किये। सीलोन के हीनयान का बौद्ध मत से सम्बन्धित यह सर्वप्रथम लेख है।

मुख्य शब्दः बौद्ध धर्म, दक्षिण-पूर्व एशिया, हीनयान, महायान, पदाअधिकारी .....इत्यादि।

प्रस्तावना:

कम्बुज देश में यह बात विशेष रूप से देखने को मिलती है कि बौद्ध धर्म का ब्राह्मण मत से कभी भी संघर्ष नहीं हुआ, कम्बुज के कुछ शासक बौद्ध होते हुए भी 'राजकीय देवराज' मत का विरोध न कर सके, पर बुद्ध को भी त्रिमूर्ति में स्थान दिया गया तथा देवराज के मन्दिर में उनकी मूर्ति स्थापित हुई। उन्हीं के प्रभाव से राजकीय पदाधिकारी भी अपने दृष्टिकोण को उदार बनाया। कवीन्द्रारिमथन, जिसने प्रज्ञापारमिता की मूर्ति स्थापित की थी। कम्बुज देश में बौद्ध धर्म का सर्वप्रथम लेख छठी शताब्दी के अंत या सातवीं शताब्दी के आरम्भ का मिलता है। इसमें प्रज्ञाचन्द्र द्वारा तीन बोधिसत्त्वों शास्त्री, मैत्रेय तथा अवलोकितेश्वर के प्रति दास और दासियों के दान का उल्लेख हैं इन बोधिसत्त्वों को 'ब्राह्म कम्राता आज्ञ' की खमेर उपाधि से सम्बोधित किया गया, जो ब्राह्मण देवताओं के लिए भी प्रयुक्त की गयी। अवलोकितेश्वर का उल्लेख किसी और लेख में नहीं है, किन्तु शक संवत् 713 के प्रसत-त-कम के लेख में लोकेश्वर की मूर्ति स्थापना का विवरण है। ईसा की सातवीं शताब्दी से पहले भी बौद्ध धर्म के कम्बुज देश में प्रवेश होने का संकेत मिलता है, जैसा कि जयवर्मन् के बत प्राई (बनोम प्रान्त) के लेख से प्रतीत होता है, जिसका काल शक संवत् 587 है। इस लेख में दो भिक्षुओं, रत्नभानु और रत्नसिंह का उल्लेख है, जिसकी भांजी को धार्मिक सम्पत्ति को प्रयोग में लाने का सम्राट द्वारा अधिकार दिया गया था। इसमें भिक्षुओं से ज्ञात होता है कि वे बौद्ध थे। खमेर लेख में इन दोनों भिक्षुओं क्षरा ब्राह्मण को दान देने का उल्लेख है, जिसका प्रयोग बुद्ध. ब्राह्मण देवता तथा सम्राट के लिए भी किया गया है। बौद्ध भिक्षुओं के नाम से इस लेख का बौद्ध धर्म से सम्बन्ध प्रतीत होता है और यही इस धर्म का सबसे प्राचीन लेख है।

बिषयवस्तु

लगभग दो शताब्दी तक कोई और बौद्ध लेख नहीं मिला। इसका कारण कदाचित् किसी शासक की इस धर्म के प्रति अवहेलना थी, जिससे इसे क्षति पहुँची। इसका उल्लेख इत्सिंग ने किया हैं यह शासक भववर्मन् अथवा ईशानवर्मन् या जयवर्मन् रहा होगा। इस प्रकार को बौद्ध धार्मिक व्यवस्था बहुत समय तक चलती रही। बौद्ध धर्म के उस युग में पूर्णतया विकसित होने पर सन्देह प्रकट करता है। कोक-स्वे-चेक लेख में पहले संघ, फिर बुद्ध और धर्म (बौद्ध त्रिमूर्ति के अन्य दो अंग) के प्रति उपासना की भावना प्रदर्शित हुई है। (नामस् संघाय संबुद्धरत्न प्रणमामि धर्मम्)। यह लेख राजेन्द्रवर्मन् के समय एक अन्य लेख में बौद्ध धर्म के योगाचार मत का उल्लेख है। में थम-पुओक (वटमवंग) से प्राप्त जयवर्मन् पंचम के शक सं. 911(988 ई.) के लेख में बुद्ध, प्रज्ञापारमिता, लोकेश्वर, वर्जिन् मैत्रेय और इन्द्र की उपासना पद्मवरोचन नामक बौद्ध साधु ने की थी। शक सं. 903 (981 ई.) में त्रिभुवनराज द्वारा बुद्ध की माता की एक मूर्ति स्थापित करने

का उल्लेख नमो-बन्ते के लेख में है तथा लोकेश्वर और प्रज्ञापारमिता की आराधना भी की गई है। जयवर्मन् सप्तम के फिमानक लेख में त्रिकाय, बुद्ध और लोकेश्वर की आराधना की गई है। सम्राट् की दोनों रानियाँ बौद्ध थीं। दूसरी प्रथम की बड़ी बहिन थी और बौद्ध साहित्य में पारंगत थी। उसने नगेन्द्रतुंग, तिलकोत्तर और नरेन्द्राश्रम के बौद्ध बिहारी में बौद्ध भिक्षुणियों को शिक्षा दी थी। उसी ने अपनी छोटी बहिन को भी बौद्ध धर्म में दीक्षा दी थी, जिससे वह अपने पति की अनुपस्थिति में उसकी प्रतिभा दिखा सके तथा उसकी पूजा कर सके। पति के लौटने पर एक विशाल समारोह का आयोजन किया गया और एक नाटक खेला गया जो जातकों पर आधारित था और इसमें भिक्षुणियों ने भाग लिया था। अपनी छोटी बहिन की मृत्यु के पश्चात् सम्राट् ने उससे विवाह किया और उसने बहुत-से बौद्ध विहार में शिक्षा देने का कार्य प्रचलित रखा। इस लेख से बौद्ध साहित्य तथा धर्म के कम्बुज में प्रचलन तथा राजवंश में उसके पूर्णतया प्रवेश पर प्रकाश पड़ता है।

कम्बुज देश में महायान के बाद हीनयान का प्रवेश हुआ। हीनयान मत सम्बन्धी केवल एक ही लेख सूर्यवर्मन् प्रथम के समय का मिला, जिसकी तिथि शक सं. 944-47 है और यह स्याम के लोपवुरि से प्राप्त हुआ, जिसके अन्तर्गत पवित्र स्थान, मंदिर, विहार, यति तथा हीनयान मत के स्थविर और महायान मत के भिक्षुओं को सम्राट् के प्रति अपने पुण्य अर्पित करने को कहा गया है। इस लेख के आधार पर उस समय बौद्ध धर्म के दोनों मतों के प्रसारण का संकेत मिलता है। महायान मत सम्बन्धी लेख प्रसत प्रह (अंकोर), प्रसत-त-कम (सिएम-राप), वत-प्राई (व नोम), कोक संम्रो (वटमवंग). थम-पुकोक (यही), नोम-बन्ते (अंकोर के दक्षिण) तथा फिमानक (अंकोर थोम) क्षेत्र में मिले। इनसे प्रतीत होता है कि महायान मत का प्रवेश उत्तर-पश्चिम से कदाचित् स्थल मार्ग द्वारा हुआ और हीनयान मत भी पहले इसी मार्ग से आया था, किन्तु बाद में सीलोन से आये हुए यात्रियों के साथ समुद्री मार्ग से यहाँ आया। इसका प्रथम लेख कोक-स्वे-चेक (पश्चिम बारे से दो मील दक्षिण) में शक सं. 1230 का श्रीन्द्रवर्मन् वाला है। महाथेर सिरि सिरिन्दमोलि (श्री इन्द्रमौलि) को एक गाँव देने का उल्लेख है और 1231 ई. में एक विहार का निर्माण हुआ जहाँ एक बौद्ध प्रतिमा स्थापित की गयी। सम्राट् ने इस विहार को चार गाँव प्रदान किये। सीलोन के हीनयान का बौद्ध मत से सम्बन्धित यह सर्वप्रथम लेख है।

चीनी स्त्रोत से भी कम्बुज-फूनान में बौद्ध मत पर कुछ प्रकाश पड़ता है। 503 ई. में एक मूंगे की बुद्ध की मूर्ति चीनी सम्राट् वू ति को फूनान से भेजी गयी। उस देश के निवासी दिव्य विभूतियों की कांसे की मूर्तियाँ भी बनाते थे ल्यू-तो-पा-मो अर्थात् रुद्रवर्मन् ने चंदन की एक बुद्ध की मूर्ति चीनी सम्राट् को भेजी और 539 ई. में बुद्ध का 12 फीट लंबा एक केश भी भेजा। संघपाल और मन्द नामक फूनान के दो बौद्ध भिक्षु भी चीन गये, जहाँ उन्होंने बौद्ध ग्रन्थों का चीनी में अनुवाद किया। 675 ई. में भारत से जाते समय इत्सिंग नामक चीनी यात्री ने पो-नन् अथवा फूनान देश का वर्णन किया है। उसका कथन है कि वहाँ के रहने वाले पहले देवताओं को पूजते थे, किन्तु बाद में वहाँ बौद्ध धर्म फैलने लगा। एक दुष्ट राजा ने बौद्ध सम्प्रदाय के लोगों को नष्ट कर दिया और इससे बौद्ध धर्म को बड़ी क्षति पहुँची। इससे प्रतीत होता है कि वा नोम क्षेत्र में, जो कि हिन्द-चीन के दक्षिण पूर्वी भाग में था, बौद्ध धर्म प्रचलित था और जैसा कि चीनी श्रोत से प्रतीत होता है, यहाँ से बौद्ध विज्ञान तथा बुद्ध की मूर्ति चीन भेजी गयी। कदाचित् भववर्मन् या उसके किसी वंशज ने इस धर्म को क्षति पहुँचायी। बौद्ध धर्म यहाँ 10वीं शताब्दी से 13वीं शताब्दी तक अपनी उन्नति के शिखर पर था और यहाँ के राजाओं में सर्वप्रथम सूर्यवर्मन्, जिसने निर्वाण पद प्राप्त किया था तथा जयवर्मन् सप्तम ने इस धर्म को बहुत प्रोत्साहन दिया। बौद्ध धर्म के अनुयायी होते हुए भी उन्होंने राजकीय मत का अनुसरण किया। यशोवर्मन् ने शैव और वैष्णव आश्रम की भाँति सोगात आश्रम की भी स्थापना की।

बौद्ध धर्म के प्रसारण में कुछ प्रमुख व्यक्तियों का भी हाथ था। सत्यवर्मन् ने फिमानक के निर्माण में प्रमुख भाग लिया था। राजेन्द्रवर्मन् के मंत्री कवीनछमथन ने बुद्ध वज्रपाणि, प्रज्ञापारमिता तथा लोकेश्वर की मूर्तियाँ स्थापना की। जयवर्मन् पंचम के मंत्री कीर्तिवर्मन् के प्रयास से बौद्ध धर्म रूपी चन्द्र आशान्तिमय वातावरण के घने बादलों से पुनः बाहर निकल आया। 'महाविभाग और तत्व संग्रह' की टीका बाहर से कम्बुज देश में आयी। तारानाथ के मतानुसार वसुबन्धु के एक शिष्य ने हिन्द-चीन में बौद्ध धर्म फैलाया था। उदयर्कवर्मन् के शक सं. 989 के प्रसत-प्रह-क्षेत लेखानुसार संघर्ष द्वारा पुनः शिवलिंग की स्थापना के साथ ब्रह्मा, विष्णु और बुद्ध की मूर्तियाँ स्थापित की गयी। इनको चतुर्थमूर्ति के नाम से सम्बोधित किया गया। शक सं. 869 के प्रह-पुत-लो के लेख में तथागत, रुद्र तथा कुछ अन्य मूर्तियों की स्थापना का उल्लेख है। बौद्ध धर्म से सम्बन्धित अन्य सार्वजनिक कार्यों का भी उल्लेख लेख में है। अशोक की भाँति जयवर्मन् सप्तम के-ता-प्रोम के लेख में सम्राट् द्वारा किये गये सार्वजनिक कार्यों का विवरण इनमें बुद्ध, धर्म, संघ, लोकेश्वर और प्रज्ञापारमिता की आराधना के बाद सम्राट् की माता तथा गुरु की प्रतिमाओं की स्थापना का उल्लेख है। सम्राट् ने 101 चिकित्सालय बनवाये जिनके प्रबन्ध का विस्तृत वृत्तान्त एक-दूसरे लेख में है जो लाओस में मिला। तंत्रयान के अतिरिक्त, महायान मत में हिन्दू और बौद्ध देवताओं को एक रूप में संतुलित करने की भावना ने भी जोर पकड़ा। कला के अतिरिक्त साहित्यिक क्षेत्र में भी यही भावना मिलती है। 'संग हंग कम हायानन मंत्रनय', 'ह्यंग कम हायानिकन' नामक दो महायान ग्रन्थों में सबसे पहले यह भावना मिलती है। इसके अनुसार काम, चित्त और वाक् के गुह्य ज्ञान से ही बुद्धावस्था प्राप्त हो सकती है।

निष्कर्ष:

कोर्ची से ईसा की 8वीं शताब्दी में धर्मपाल गया था और 11वीं शताब्दी में अतिश दीपंकर नामक बौद्ध विद्वान् सुवर्ण-दीप गया। केलाक के लेख में कुमार घोष नामक बौद्ध विद्वान् के जावा जाने का उल्लेख है। उसने मंजुश्री की मूर्ति का अभिषेक किया था। बौद्ध साहित्य और कला के आधार पर बौद्ध धर्म के आदि बुद्ध, प्रज्ञापारमिता, ध्यानी बुद्ध, मानुषी बुद्ध, बोधिसत्व और तारा की प्रतिमाएँ और उनके नामकरण जावा में भी मिलते हैं। इन लेखों के अध्ययन से प्रतीत होता है कि कम्बुज में बौद्ध धर्म का प्रवेश स्थल तथा जल मार्ग से हुआ। पहले बौद्ध धर्म को कुछ क्षति पहुँची, किन्तु 10वीं शताब्दी की बाद से महायान मत उन्नति करता गया। इसका ब्राह्मण धर्म के साथ विरोध न था और तथागत को भी ब्राह्मण धर्म में स्थान दिया गया था। ब्राह्मण धर्म को बौद्ध धर्म से भी कोई क्षति नहीं पहुँची। उपर्युक्त वृत्तान्त से यह भली भाँति विदित हो जायेगा कि विस्तृत दृष्टिकोण और उदारता के कारण कम्बुज में बौद्ध धर्म ब्राह्मण धर्म की तरह भली-भाँति फलता-फूलता रहा और इसने सूर्यवर्मन् प्रथम और जयवर्मन् सप्तम आदि कम्बुज सम्राटों से आदर प्राप्त किया।

References

1. Majumdar RC. Kambujadesa, Madras, 1944 Indian Colonies in the Far East, Calcutta, "Ancient Indian Colonies in the far East", 1944.
2. Chutterji BR. Recent Advances in Kambuja Studies J.G.I.S. VII, P. 42.
3. Tantrism in Cambodies Sumata and Java, M.R. XLVII.
4. Quartiseh Wales: A Newly Explored Route of Ancient Indian Cultural Expansun IA Sh. IX 1bb.
5. Ghose M.R. "History of Combodia", Calcutta, 1954.
6. Germn GF. "Researches in Ptolemy's Geography" London, 1909, Codes G. Inscriptions DU Combodge, 1937, 6